

# Chitragupt Chalisa Lyrics

## **Chitragupt Chalisa Lyrics in Hindi**

॥ दोहा ॥

सुमिर चित्रगुप्त ईश को, सतत नवाऊ शीश । ब्रह्मा विष्णु महेश सह, रिनिहा भए जगदीश ॥  
करो कृपा करिवर वदन, जो सरशुती सहाय । चित्रगुप्त जस विमलयश, वंदन गुरुपद लाय ॥

॥ चौपाई ॥

जय चित्रगुप्त ज्ञान रत्नाकर । जय यमेश दिगंत उजागर ॥

अज सहाय अवतरेउ गुसाई । कीन्हेउ काज ब्रह्म कीनाई ॥

श्रृष्टि सृजनहित अजमन जांचा । भांति-भांति के जीवन राचा ॥

अज की रचना मानव संदर । मानव मति अज होइ निरुत्तर ॥

भए प्रकट चित्रगुप्त सहाई । धर्माधर्म गुण ज्ञान कराई ॥

राचेउ धरम धरम जग मांही । धर्म अवतार लेत तुम पांही ॥

अहम विवेकइ तुमहि विधाता । निज सत्ता पा करहिं कुघाता ॥

श्रष्टि संतुलन के तुम स्वामी । त्रय देवन कर शक्ति समानी ॥

पाप मृत्यु जग में तुम लाए । भयका भूत सकल जग छाए ॥

महाकाल के तुम हो साक्षी । ब्रह्मउ मरन न जान मीनाक्षी ॥

धर्म कृष्ण तुम जग उपजायो । कर्म क्षेत्र गुण ज्ञान करायो ॥

राम धर्म हित जग पगु धारे । मानवगुण सदगुण अति प्यारे ॥

विष्णु चक्र पर तुमहि विराजें । पालन धर्म करम शुचि साजे ॥

महादेव के तुम त्रय लोचन । प्रेरकशिव अस ताण्डव नर्तन ॥

सावित्री पर कृपा निराली । विद्यानिधि माँ सब जग आली ॥

रमा भाल पर कर अति दाया । श्रीनिधि अगम अकूत अगाया ॥

ऊमा विच शक्ति शुचि राच्यो । जाकेविन शिव शव जग बाच्यो ॥

गुरु बृहस्पति सुर पति नाथा । जाके कर्म गहइ तव हाथा ॥

रावण कंस सकल मतवारे । तव प्रताप सब सरग सिधारे ॥

प्रथम् पूज्य गणपति महदेवा । सोउ करत तुम्हारी सेवा ॥

रिदधि सिदधि पाय द्वैनारी । विघ्न हरण शुभ काज संवारी ॥

व्यास चहइ रच वेद पुराना । गणपति लिपिबद्ध हितमन ठाना ॥

पोथी मसि शुचि लेखनी दीन्हा । असवर देय जगत कृत कीन्हा ॥

लेखनि मसि सह कागद कोरा । तव प्रताप अजु जगत मझोरा ॥

विद्या विनय पराक्रम भारी । तुम आधार जगत आभारी ॥

द्वादस पूत जगत अस लाए । राशी चक्र आधार सुहाए ॥

जस पूता तस राशि रचाना । ज्योतिष केतुम जनक महाना ॥

तिथी लगन होरा दिग्दर्शन । चारि अष्ट चित्रांश सुदर्शन ॥

राशी नखत जो जातक धारे । धरम करम फल तुमहि अधारे ॥

राम कृष्ण गुरुवर गृह जाई । प्रथम गुरु महिमा गुण गाई ॥

श्री गणेश तव बंदन कीना । कर्म अकर्म तुमहि आधीना ॥

देववृत जप तप वृत कीन्हा । इच्छा मृत्यु परम वर दीन्हा ॥

धर्महीन सौदास कुराजा । तप तुम्हार बैकुण्ठ विराजा ॥

हरि पद दीन्ह धर्म हरि नामा । कायथ परिजन परम पितामा ॥

शुर शुयशमा बन जामाता । क्षत्रिय विप्र सकल आदाता ॥

जय जय चित्रगुप्त गुसाई । गुरुवर गुरु पद पाय सहाई ॥

जो शत पाठ करइ चालीसा । जन्ममरण दुःख कटइ कलेसा ॥

विनय करै कुलदीप शुवेशा । राख पिता सम नेह हमेशा ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान कलम, मसि सरस्वती, अंबर है मसिपात्र । कालचक की पुस्तिका, सदा रखे दंडास्त्र ॥

पाप पुन्य लेखा करन, धार्यों चित्र स्वरूप । शृष्टिसंतुलन स्वामीसदा, सरग नरक कर भूप ॥

॥ इति श्री चित्रगुप्त चालीसा समाप्त ॥

## Chitragupt Chalisa Lyrics in English and Hinglish

॥ doha ॥

Sumir Chitragupt Ish ko, satat navaau sheesh.  
Brahma Vishnu Mahesh sah, rinihiha bhae Jagdish.  
Karo kripa karivar vadan, jo Sarashuti sahay.  
Chitragupt jas vimalayash, vandan Gurupad laay.

॥ chaupai ॥

Jay Chitragupt gyaan ratnakar.  
Jay Yamesh digant ujagar.

Aj sahay avatareu Gusain.  
Kiheu kaaj Brahma kinai.

Shrishti srijanhit ajman jaancha.

Bhanti-bhanti ke jeevan racha.

Aj ki rachna maanav sundar.

Maanav mati aj hoi niruttar.

Bhae prakat Chitragupt sahai.

Dharmadharm gun gyaan karai.

Racheu dharm dharam jag maahi.

Dharm avatar let tum paahi.

Aham vivekai tumhi vidhata.

Nij satta paa karahin kughaata.

Shrishti santulan ke tum swami.

Tray devan kar shakti samani.

Paap mrityu jag mein tum laaye.

Bhayka bhoot sakal jag chhaaye.

Mahakaal ke tum ho sakshi.

Brahmaau maran na jaan Meenakshi.

Dharm Krishna tum jag upjayo.

Karm kshetra gun gyaan karayo.

Ram dharm hit jag pag dhare.

Maanavgun sadgun ati pyaare.

Vishnu chakra par tumhi viraje.

Palana dharm karam shuchi saaje.

Mahadev ke tum tray lochan.

Prerakshiv as taandav nartan.

Saavitri par kripa niraali.

Vidyaanidhi maa sab jag aali.

Rama bhaal par kar ati daaya.

Shreenidhi agam akoot agaaya.

Uma vich shakti shuchi raachyo.

Jaake bin Shiv shav jag bachyo.

Guru Brihaspati sur pati naatha.

Jaake karm gahi tava haatha.

Ravan Kans sakal matvaare.

Tava pratap sab sarg sidhare.

Pratham poojya Ganapati Mahadeva.

Sou karat tumhaari seva.

Riddhi Siddhi paay dvainari.

Vighn haran shubh kaaj sanvaari.

Vyas chahai rach ved puraana.  
Ganapati lipibadh hitman thaana.

Pothi masi shuchi lekhani deekha.  
Asvar dey jagat krut kiinha.

Lekhani masi sah kagad kora.  
Tava pratap aju jagat majhura.

Vidya vinay parakram bhaari.  
Tum aadhar jagat aabhaari.

Dwadash poot jagat as laaye.  
Raashi chakra aadhar suhaaye.

Jas poota tas raashi rachana.  
Jyotish ke tum janak mahaana.

Tithi lagan hora digdarshan.  
Chaar asht chitraans sudarshan.

Raashi nakhat jo jatak dhaare.  
Dharm karam phal tumhi adhaare.

Ram Krishna Guruvaar grih jaayi.  
Pratham Guru mahima gun gaayi.

Shri Ganesh tava bandan kiina.  
Karm akarm tumhi aadheena.

Devvrit jap tap vrit kiinha.  
Ichha mrityu param var diinha.

Dharmhin Saudasa Kuraja.  
Tap tumhaar Baikunth viraaja.

Hari pad dihi dharm Hari naama.  
Kayath parijaan param pitama.

Shur shuyashma ban jaamata.  
Kshatriya Vipra sakal aadata.

Jay jay Chitragupt Gusain.  
Guruvaar Guru pad paay sahai.

Jo shat paath karai Chaleesa.  
Janmamaran dukh katayi kalesa.

Vinay karain Kuldeep Shuvisha.  
Raakh pita sam neh hamesha.

□ doha □

Gyaan kalam, masi Saraswati, ambar hai masipaatra.  
Kalachakra ki pustika, sada rakhe dandastra.  
Paap puny lekha karan, dhaaryo Chitra swaroop.  
Shrishtisantulan Swami sada, sarg narak kar bhoop.

॥ iti Shri Chitragupt Chaleesa samaapt ॥

## Chitragupt Chalisa Meaning in Hindi

### दोहा

सुमिर चित्रगुप्त ईश को, सतत नवाऊ शीशा ।

(**Chitragupt Ish ka smaran karte hue, sadaiv apna sir jhukate hain.**)

यहाँ भक्त चित्रगुप्त भगवान का स्मरण कर रहे हैं और हमेशा उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त कर रहे हैं।

ब्रह्मा विष्णु महेश सह, रिनिहा भए जगदीश ।

(**Brahma, Vishnu aur Mahesh ke saath, jo Jagdish hain, unka भी स्मरण करें।**)

भक्त कह रहे हैं कि चित्रगुप्त भगवान के साथ-साथ ब्रह्मा, विष्णु और महेश का भी ध्यान करना चाहिए।

करो कृपा करिवर वदन, जो सरश्वती सहाय ।

(**Kripalu karivar, jo Sarashwati ke sahayak hain, unka ध्यान करें।**)

यहाँ चित्रगुप्त भगवान से कृपा की प्रार्थना की जा रही है, जो ज्ञान की देवी सरस्वती की मदद करते हैं।

चित्रगुप्त जस विमलयश, वंदन गुरुपद लाय ।

(**Chitragupt ki kirti aur unka विमल यश है, unki पूजा करें।**)

चित्रगुप्त के गुणों और यश की प्रशंसा की जा रही है और उनके गुणों का सम्मान करने की बात हो रही है।

### चौपाई

जय चित्रगुप्त ज्ञान रत्नाकर ।

(**Jay Chitragupt, jo gyaan ka ratan hain.**)

यहाँ चित्रगुप्त को ज्ञान का रत्न कहा जा रहा है और उनकी जयजयकार की जा रही है।

जय यमेश दिगंत उजागर ।

(**Jay Yamraj, jo dikhayi dete hain.**)

यमराज को भी सम्मानित किया जा रहा है, जो मृत्यु के देवता हैं और जो सबको अपनी उपस्थिति दिखाते हैं।

अज सहाय अवतरेउ गुसाई ।

(**Aj sahay aakar aaye Gusain.**)

चित्रगुप्त भगवान को भक्त कहते हैं कि वह हमेशा सहायता के लिए आते हैं।

कीन्हेउ काज ब्रह्म कीनाई ।

(**Unhone Brahma ke kaaj kiye hain.**)

यहाँ चित्रगुप्त भगवान को ब्रह्म के कार्यों को पूर्ण करने वाला बताया जा रहा है।

शृष्टि सृजनहित अजमन जांचा ।

(**Shrishti srijan ke liye unhone ajman ko jaancha hai.**)

चित्रगुप्त का उद्देश्य सृष्टि का निर्माण करना है, जिसमें उन्होंने समस्त जीवों के जीवन का रचना की है।

भांति-भांति के जीवन राचा ।

(**Bhaanti-bhaanti ke jeevan ka racha hai.**)

यहाँ चित्रगुप्त द्वारा विभिन्न प्रकार के जीवन के निर्माण की बात की जा रही है।

अज की रचना मानव संदर।

(Aj ki rachna manav sundar hai.)

मनुष्य की रचना को सुंदर बताया जा रहा है, जो चित्रगुप्त द्वारा की गई है।

मानव मति अज होइ निरुत्तर।

(Maanav ki mati aj ho gayi niruttar.)

यहाँ मानव की बुद्धि और विवेक की चर्चा की जा रही है, जो चित्रगुप्त के ज्ञान से प्रेरित है।

भए प्रकट चित्रगुप्त सहाई।

(Chitragupt sahai ke roop mein prakat hue hain.)

चित्रगुप्त का प्रकट होना भक्तों के लिए सहायक माना जा रहा है।

धर्माधर्म गुण ज्ञान कराई।

(Dharma aur adharma ke gunon aur gyaan ko prastut kiya hai.)

चित्रगुप्त धर्म और अधर्म के गुणों और ज्ञान की व्याख्या करते हैं।

राचेउ धरम धरम जग मांही।

(Dharm ki rachna ki hai tumne is jagat mein.)

चित्रगुप्त द्वारा इस संसार में धर्म की स्थापना की गई है।

धर्म अवतार लेत तुम पांही।

(Dharm ka avatar tumne liya hai.)

यहाँ चित्रगुप्त को धर्म का अवतार कहा जा रहा है।

अहम विवेकइ तुमहि विधाता।

(Tumhi ho vyakti ke liye vidhata.)

चित्रगुप्त को विधाता कहा जा रहा है, जो सभी जीवों का ध्यान रखते हैं।

निज सत्ता पा करहिं कुधाता।

(Apni shakti paa kar kuch log burai karte hain.)

यहाँ यह कहा जा रहा है कि कुछ लोग अपनी शक्ति का गलत उपयोग करते हैं।

श्रस्ति संतुलन के तुम स्वामी।

(Tum shrishti ka santulan rakhte ho.)

चित्रगुप्त को सृष्टि के संतुलन का स्वामी माना गया है।

त्रय देवन कर शक्ति समानी।

(Tino devtaon ki shakti ko ekathit kiya hai.)

चित्रगुप्त सभी देवताओं की शक्तियों को एकत्रित करते हैं।

पाप मृत्यु जग में तुम लाए।

(Tumne paap aur mrityu ko is jagat mein laya hai.)

यहाँ चित्रगुप्त का कार्य पाप और मृत्यु का संतुलन बनाए रखना बताया जा रहा है।

भयका भूत सकल जग छाए।

(Sakal jag mein bhay ka bhoot chhaya hua hai.)

यहाँ भय का अनुभव सभी जीवों में व्याप्त है।

महाकाल के तुम हो साक्षी।

(Tum Mahakaal ke sakshi ho.)

चित्रगुप्त को महाकाल का साक्षी कहा जा रहा है, जो समय के साक्षी होते हैं।

**ब्रह्म भरन न जान मीनाक्षी ।**

**(Brahma ko maran ka pata nahi hai, Meenakshi.)**

यहाँ ब्रह्मा को मृत्यु का अनुभव नहीं होता है, जो चित्रगुप्त की शक्ति का प्रमाण है।

**धर्म कृष्ण तुम जग उपजायो ।**

**(Tumne dharm Krishna ka srijan kiya hai.)**

चित्रगुप्त को धर्म के माध्यम से कृष्ण का सृजन करने वाला कहा जा रहा है।

**कर्म क्षेत्र गुण ज्ञान करायो ।**

**(Tumne karma ke kshetra mein gun aur gyaan ka pradan kiya hai.)**

यहाँ चित्रगुप्त द्वारा कर्म क्षेत्र में गुण और ज्ञान की स्थापना की बात की जा रही है।

**राम धर्म हित जग पगु धारे ।**

**(Ram ne dharm ke hit mein jagat ke liye padaav dhara hai.)**

यहाँ राम के द्वारा धर्म के हित में पथ का निर्माण करने की चर्चा की जा रही है।

**मानवगुण सदगुण अति प्यारे ।**

**(Maanavgun aur sadgun bahut pyare hain.)**

मानव के गुणों और सद्गुणों की प्रशंसा की जा रही है।

**विष्णु चक्र पर तुमहि विराजे ।**

**(Vishnu chakra par tumhi viraj rahe ho.)**

चित्रगुप्त को विष्णु के चक्र पर विराजमान बताया जा रहा है।

**पालन धर्म करम शुचि साजे ।**

**(Dharm aur karma ko shuchi banate ho.)**

यहाँ चित्रगुप्त द्वारा धर्म और कर्म की पवित्रता की बात की जा रही है।

**महादेव के तुम त्रय लोचन ।**

**(Tum Mahadev ke tray lochan ho.)**

यहाँ चित्रगुप्त को महादेव के तीन नेत्रों वाला बताया जा रहा है।

**प्रेरकशिव अस ताण्डव नर्तन ।**

**(Tum Shiva ke as prerna dete ho, jo taandav karte hain.)**

यहाँ चित्रगुप्त का महादेव के नृत्य का प्रेरक होना बताया जा रहा है।

**सावित्री पर कृपा निराली ।**

**(Tumne Savitri par vishesh kripa ki hai.)**

चित्रगुप्त की कृपा सावित्री पर विशेष रूप से है।

**विद्यानिधि माँ सब जग आली ।**

**(Vidya ki mata, tumne sab jag ko samriddh kiya hai.)**

यहाँ चित्रगुप्त को विद्या का दाता बताया गया है।

**रमा भाल पर कर अति दाया ।**

**(Rama ka bhaal par tumhari daya hai.)**

यहाँ राम की कृपा चित्रगुप्त पर बताई जा रही है।

**श्रीनिधि अगम अकूत अगाया ।**

**(Shreenidhi, jo apaar aur akal hain, unka vikas hota hai.)**

यहाँ चित्रगुप्त के माध्यम से अपार संपत्ति की चर्चा हो रही है।

**ऊमा विच शक्ति शुचि राच्यो ।**

**(Uma ke saath shakti ka vikas hota hai.)**

यहाँ चित्रगुप्त और उमादेवी के संबंध में शक्ति की चर्चा की जा रही है।

**जाके बिन शिव शब जग बच्यो ।**

**(Shiv ke bina jagat mein koi bhi jeev नहीं है।)**

यहाँ शिव और चित्रगुप्त के संबंध में यह बताया जा रहा है कि शिव के बिना जगत अधूरा है।

**गुरु वृहस्पति सुर पति नाथा ।**

**(Guru Bhraspati, jo devon ke guru hain, unka ध्यान करें।)**

यहाँ चित्रगुप्त के प्रति श्रद्धा व्यक्त की जा रही है।

**जाके कर्म गहि तव हाँथा ।**

**(Tumhare kaam se hi sab kuch sambhav hota hai॥)**

यहाँ चित्रगुप्त के कामों की प्रशंसा की जा रही है।

**रावन कंस सकल मतवारे ।**

**(Ravan aur Kansa jaise paap ke pratik, unka kash dikhayi dete hain॥)**

यहाँ चित्रगुप्त को रावण और कंस जैसे पापियों का सामना करने वाला कहा जा रहा है।

**तव प्रताप सब सर्ग सिधारे ।**

**(Tumhare प्रताप se sab kuch sidh hota hai॥)**

चित्रगुप्त के प्रभाव से संसार के सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

**प्रथम पूज्य गणपति महादेवा ।**

**(Pratham poojya Ganapati, jo Mahadev hain॥)**

यहाँ गणपति को पहले पूजा जाने वाले भगवान बताया जा रहा है।

**सौ करत तुम्हारी सेवा ।**

**(Tumhari seva karte hain॥)**

भक्त चित्रगुप्त की सेवा करने की बात कर रहे हैं।

**रिद्धि सिद्धि पाय द्वै नारी ।**

**(Riddhi aur Siddhi ko paane wala hai॥)**

यहाँ चित्रगुप्त को सिद्धि और रिद्धि का दाता कहा गया है।

**विघ्न हरन शुभ काज संवारी ।**

**(Tum Vighn ko harte ho aur shubh kaam sambhalte ho॥)**

यहाँ चित्रगुप्त को वाधाओं को दूर करने वाला कहा जा रहा है।

**व्यास चाहै रच वेद पुराण ।**

**(Vyasa ne ved aur purano ki rachna ki hai॥)**

यहाँ वेद और पुराणों की रचना की बात की जा रही है।

**गणपति लिपिबद्धित हितमान थाना ।**

**(Ganapati ke aashirwad se likhne वाला।)**

यहाँ चित्रगुप्त को गणपति के साक्षात्कार से जोड़कर देखा जा रहा है।

**पुस्तक मसी शुचि लेखनी देख ।**

**(Kitaab mein shuchi lekhni ki baat है।)**

यहाँ लेखनी के पवित्रता की चर्चा हो रही है।

असवर देय जगत कृत कीन्हा ।

(Tumne sab jagat ko pradaan kiya है ।)

यहाँ चित्रगुप्त को सृष्टि का कर्ता माना जा रहा है ।

लेखनी मसी सह कागद कोरा ।

(Lehkar ke saath sab kaghad ka sanrakshan)

यहाँ लेखनी की पवित्रता की बात की जा रही है ।

तब प्रताप अज जगत मजहूरा ।

(Tumhare प्रभाव se sab jagat majdoor hai)

यहाँ चित्रगुप्त के प्रभाव से जगत की महत्ता को दर्शाया जा रहा है ।

विद्या विनय पराक्रम भारी ।

(Tumhe Vidya aur Vinay se bhara हुआ माना गया है ।)

यहाँ चित्रगुप्त को विद्या और विनय से परिपूर्ण बताया जा रहा है ।

तुम आधार जगत आबकारी ।

(Tum jagat ka aadhar ho)

यहाँ चित्रगुप्त को सम्पूर्ण जगत का आधार बताया गया है ।

द्वादश पूत जगत अस लाए ।

(Tumne 12 putraon ka srijan kiya है ।)

यहाँ चित्रगुप्त को 12 पुत्रों का सर्जक बताया गया है ।

राशि चक्र आधार सुहाए ।

(Rashi chakra ka aadhar tum ho)

यहाँ राशियों के चक्र का निर्माण चित्रगुप्त से जोड़ा जा रहा है ।

जस पूत तस राशि रचना ।

(Tumhare gunaon se hi rashि ka srijan हुआ है ।)

यहाँ चित्रगुप्त की महिमा के साथ राशियों की रचना का जिक्र हो रहा है ।

ज्योतिष के तुम जनक महान ।

(Tum jyotish ke janak ho)

चित्रगुप्त को ज्योतिष का जनक बताया गया है ।

तिथि लगन होरा दिग्दर्शन ।

(Tithi aur lagan ka dikhayi dena tumhara काम है ।)

यहाँ तिथियों और लगनों के ज्ञान की चर्चा हो रही है ।

चार अष्ट चित्रांश सुदर्शन ।

(Chaar asht ka chitran tumhara hai)

यहाँ चित्रगुप्त के कायों को दर्शाया जा रहा है ।

राशि नक्षत्र जो जातक धारे ।

(Rashi aur nakshatron ka samarthan tum karte हो ।)

यहाँ जातक राशियों और नक्षत्रों की बात की जा रही है ।

धर्म कर्म फल तुम्ही अधारे ।

(Tum dharm aur karma ke fal ka aadhar ho)

यहाँ चित्रगुप्त को धर्म और कर्म का फल देने वाला माना जा रहा है ।

**राम कृष्ण गुरुवार गृह जाई ।**

**(Ram aur Krishna ka smaran गुरुवार को होता है ।)**

यहाँ राम और कृष्ण का गुरुवार को स्मरण करने की बात की जा रही है ।

**प्रथम गुरु महिमा गुण गाई ।**

**(Pratham guru ki mahima aur guna ki चर्चा होती है ।)**

यहाँ पहले गुरु की महिमा की बात की जा रही है ।

**श्री गणेश तब बंधन कीना ।**

**(Shri Ganesh ki pooja karna॥)**

यहाँ गणेश जी की पूजा और बंधन की चर्चा हो रही है ।

**कर्म अकरम तुमही अधीन ।**

**(Tum hi ho karm aur akarm ke अधीन ।)**

यहाँ चित्रगुप्त को कर्म और अकरम के अधीन बताया जा रहा है ।

**देववृत्त जाप तप वृत्त कीन्हा ।**

**(Devvrit ka jap aur tapasya ki baat॥)**

यहाँ देवताओं के प्रति भक्ति की चर्चा हो रही है ।

**इच्छा मृत्यु परम वर दीन्हा ।**

**(Tumne mrityu ke samay ki इच्छा दी है ।)**

यहाँ चित्रगुप्त से इच्छाओं को पूर्ण करने की बात की जा रही है ।

**धर्महिन साउदास कुरजा ।**

**(Dharm ke bina Saudasa ka sthaan है ।)**

यहाँ धर्म के बिना स्थान के चर्चा हो रही है ।

**तप तुमहार बैकुंठ विराजा ।**

**(Tumhare तप से बैकुंठ की स्थापना हुई है ।)**

यहाँ चित्रगुप्त के तप को बैकुंठ की प्रतिष्ठा से जोड़ा जा रहा है ।

**हरी पद दीहि धर्म हरि नाम ।**

**(Tumhari kripa se hi sabko dharm aur naam मिलते हैं ।)**

यहाँ चित्रगुप्त के प्रभाव को दर्शाया जा रहा है ।

**कथय परिजान परम पिताम ।**

**(Tum param pitamah se जुड़े हुए हो ।)**

यहाँ चित्रगुप्त को परम पिताम का सार्थी कहा जा रहा है ।

**शुर शुयशमा बन जमाता ।**

**(Shur aur शुयश का संग बनता है ।)**

यहाँ शूरवीरता और शुयश की चर्चा की जा रही है ।

**क्षत्रिय विप्र सकल आदाता ।**

**(Kshatriya aur Vipra ka sambandh है ।)**

यहाँ क्षत्रिय और व्राह्मण का महत्त्व बताया जा रहा है ।

**जय जय चित्रगुप्त गुसांई ।**

**(Chitragupt ki जय हो ।)**

यहाँ चित्रगुप्त की जयजयकार की जा रही है ।

गुरुवास गुरु पद पाय सहाई ।

(Guru ke pad ka सम्मान करना चाहिए ।)

यहाँ गुरु के पद की महत्ता की बात की जा रही है ।

जो शत पाठ करै चलेसा ।

(Jo iska 100 बार पाठ karega ॥)

यहाँ भक्तों को 100 बार पाठ करने की सलाह दी जा रही है ।

जन्म मरण दुख कटै कलेसा ।

(Janm aur mrityu ke दुख को दूर करना ।)

यहाँ चित्रगुप्त के पाठ से जीवन के दुखों को दूर करने की बात की जा रही है ।

विनय करै कुलदीप शुभिशा ।

(Vinay se sabhi ko shubh milta है ।)

यहाँ विनय के महत्व को बताया जा रहा है ।

जाके नाम हरे राम रघुराई ।

(Tumhara naam Hara Ram se जुड़ा है ।)

यहाँ चित्रगुप्त को राम का संदर्भ देते हुए पूजने की बात की जा रही है ।

ध्यान धरै करै सदा सुखाई ।

(Jo tumhara ध्यान करेगा, uska sukh सदा रहेगा ।)

यहाँ ध्यान के महत्व को बताया जा रहा है ।

राम भक्त जन गण गाते ।

(Ram ke bhakt log gungunate hain ॥)

यहाँ राम के भक्तों का ध्यान किया जा रहा है ।

जय जय चित्रगुप्त गुसाई ।

(Chitragupt ki जय हो ।)

यहाँ फिर से चित्रगुप्त की जयजयकार की जा रही है ।

जो सुमिरै ध्यान धरै मन लागै ।

(Jo iski yaad karega aur man se dhyan karega ॥)

यहाँ ध्यान और स्मरण का महत्व बताया जा रहा है ।

तिन्ह पावे सुख निसदिन लागै ।

(Woh sukh prapt karega aur din raat sukh mehsoos karega ॥)

यहाँ भक्तों को सुख की प्राप्ति की बात की जा रही है ।

श्री चित्रगुप्त जी का चरण प्रणाम ।

(Shri Chitragupt ko namaskar ॥)

यहाँ चित्रगुप्त जी के चरणों को प्रणाम किया जा रहा है ।

कर्म शुभ साधना संतोष ।

(Shubh karya aur santosh prapt hota है ।)

यहाँ चित्रगुप्त से शुभ कार्य और संतोष की प्राप्ति की बात की जा रही है ।

विघ्न हरन सभी को दिखाई ।

(Tum Vighn ko harne wale हो ।)

यहाँ चित्रगुप्त को वाधाओं को दूर करने वाला कहा जा रहा है ।

**कर्म प्रगति पाय धर्म निवार्द्ध।**

**(Tumhari kripa se sabko dharm ka palan करने का अवसर मिलता है।)**

यहाँ चित्रगुप्त के माध्यम से धार्मिक कार्यों की बात की जा रही है।

**तब महिमा अमिट अति बड़ाई।**

**(Tumhari mahima amar hai।)**

यहाँ चित्रगुप्त की महिमा को अमर बताया जा रहा है।

**जय जय चित्रगुप्त गुसाई।**

**(Chitragupt ki जय हो।)**

यहाँ एक बार फिर चित्रगुप्त की जयजयकार की जा रही है।

## **Chitragupt Chalisa Meaning in English**

**शक्ति स्वरूप साजू भक्ति धारा।**

**(The embodiment of power, establish a stream of devotion.)**

This line speaks about invoking divine power and creating a channel of devotion.

**सदेश चित्रगुप्त यश प्रवाह।**

**(The message flows with the glory of Chitragupt.)**

It indicates that the message is enriched with the glory of Chitragupt.

**जाके बिन शिव शब जग बच्यो।**

**(Without Shiva, the world is lifeless.)**

This line emphasizes that without Shiva, the world is incomplete.

**गुरु बृहस्पति सुर पति नाथ।**

**(O Guru Bhraspati, Lord of the Devas.)**

Here, there is an expression of reverence towards Guru Bhraspati, who is the teacher of the gods.

**जाके कर्म गहि तब हाँथा।**

**(By your actions, everything is possible.)**

It praises Chitragupt's actions as the foundation for all that happens.

**रावन कंस सकल मतवारे।**

**(You confront sinners like Ravana and Kansa.)**

This line states that Chitragupt faces evildoers like Ravana and Kansa.

**तब प्रताप सब सर्ग सिधारे।**

**(By your glory, all creation is accomplished.)**

It acknowledges that everything in creation is achieved through Chitragupt's influence.

**प्रथम पूज्य गणपति महादेवा।**

**(First revered is Ganapati, the great God.)**

This refers to Ganapati being worshipped first and foremost.

**सौ करत तुम्हारी सेवा।**

**(We serve you with a hundred hands.)**

The devotees express their readiness to serve Chitragupt wholeheartedly.

**रिद्धि सिद्धि पाय द्वै नारी।**

**(You grant Riddhi and Siddhi, the two goddesses.)**

Chitragupt is recognized as the giver of prosperity (Riddhi) and success (Siddhi).

**विघ्न हरन शुभ काज संवारी ।**

**(You remove obstacles and fulfill good deeds.)**

It emphasizes Chitragupt's role in eliminating difficulties and helping to achieve auspicious goals.

**व्यास चाहै रच वेद पुराण ।**

**(Vyasa desires to compose the Vedas and Puranas.)**

This line mentions that Vyasa seeks to write the sacred texts.

**गणपति लिपिबद्धित हितमान थाना ।**

**(In your service, Ganapati is honored.)**

It indicates that in service to Chitragupt, Ganapati is held in high esteem.

**पुस्तक मसी शुचि लेखनी देख ।**

**(Look at the pure writing of the book.)**

This line refers to the purity of the writing that is inspired by Chitragupt.

**असवर देय जगत कृत कीन्हा ।**

**(You have created the world through your writing.)**

Chitragupt is acknowledged as the creator of the world through his actions.

**लेखनी मसी सह कागद कोरा ।**

**(With the pen, you protect the blank paper.)**

This signifies the power of writing and recording to create and safeguard knowledge.

**तव प्रताप अज जगत मजहूरा ।**

**(Your glory is known throughout the world.)**

It states that Chitragupt's influence is recognized universally.

**विद्या विनय पराक्रम भारी ।**

**(You are filled with knowledge, humility, and valor.)**

This line praises Chitragupt for embodying wisdom, modesty, and bravery.

**तुम आधार जगत आबकारी ।**

**(You are the foundation of the universe.)**

Chitragupt is depicted as the fundamental support of all existence.

**द्वादश पूत जगत अस लाए ।**

**(You brought forth the twelve progeny.)**

This indicates that Chitragupt is the creator of the twelve zodiac signs or groups.

**राशि चक्र आधार सुहाए ।**

**(You are the basis of the zodiacal chart.)**

This speaks about Chitragupt's connection to the astrological system.

**जस पूत तस राशि रचना ।**

**(The qualities of the progeny are reflected in the zodiac signs.)**

This line indicates that the characteristics of the zodiac signs are derived from Chitragupt's attributes.

**ज्योतिष के तुम जनक महान ।**

**(You are the great originator of astrology.)**

Chitragupt is revered as the father of astrology.

तिथि लगन होरा दिग्दर्शन ।

**(You guide the dates and auspicious timings.)**

This highlights Chitragupt's role in determining favorable timings for events.

चार अष्ट चित्रांश सुदर्शन ।

**(You depict the eight directions beautifully.)**

Here, it emphasizes Chitragupt's skill in illustrating the cardinal directions.

राशि नक्षत्र जो जातक धारे ।

**(You support the zodiac and stars for the native.)**

This indicates Chitragupt's influence on the zodiac signs and their impact on individuals.

धर्म कर्म फल तुम्ही अधारे ।

**(You are the basis of dharma and the fruits of actions.)**

This signifies that Chitragupt is fundamental to righteousness and the results of actions.

राम कृष्ण गुरुवार गृह जाई ।

**(Ram and Krishna are remembered on Thursdays.)**

This refers to the practice of remembering Lord Ram and Krishna on Thursdays.

प्रथम गुरु महिमा गुण गाई ।

**(The virtues of the first guru are sung.)**

This highlights the glory and qualities of the first spiritual teacher.

श्री गणेश तव बंधन कीना ।

**(Shri Ganesh is worshipped as a bond.)**

This emphasizes the connection to Ganesh in worship.

कर्म अकरम तुम्ही अधीन ।

**(You are the master of action and inaction.)**

Chitragupt is acknowledged as the ruler over actions and their absence.

देववृत्त जाप तप वृत्त कीन्हा ।

**(You engage in devotion, chanting, and penance.)**

This speaks about Chitragupt's devotion and ascetic practices.

इच्छा मृत्यु परम वर दीन्हा ।

**(You grant wishes at the time of death.)**

This line refers to Chitragupt's ability to fulfill desires at the time of death.

धर्महिन साउदास कुरजा ।

**(Without dharma, there is no place for the fallen.)**

It indicates that without righteousness, there is no honor for the fallen.

तप तुमहार बैकुंठ विराजा ।

**(Your penance established the abode of Vaikuntha.)**

This states that through Chitragupt's asceticism, the realm of Vaikuntha was founded.

हरी पद दीहि धर्म हरि नाम ।

**(You bestow the path of righteousness and the name of Hari.)**

This highlights Chitragupt's role in guiding towards righteousness and the divine.

क्यथ परिजान परम पिताम ।

**(You are connected with the supreme grandfather.)**

This signifies Chitragupt's association with divine authority.

शुर शूयशमा बन जमाता ।

**(You create alliances of valor and good reputation.)**

Here, it emphasizes the establishment of noble relationships.

क्षत्रिय विप्र सकल आदाता ।

**(You honor both Kshatriyas and Brahmins.)**

This highlights the respect for both warrior and priestly classes.

जय जय चित्रगुप्त गुसाईं ।

**(Hail, hail, Lord Chitragupt!)**

This is an invocation of praise for Chitragupt.

गुरुवास गुरु पद पाय सहाई ।

**(Seek the blessings of the guru.)**

This emphasizes the importance of receiving the guru's blessings.

जो शत पाठ करै चलेसा ।

**(Whoever recites this a hundred times.)**

This line encourages the recitation of the verses.

जन्म मरण दुख कटै कलेसा ।

**(Reciting this alleviates the pain of birth and death.)**

It suggests that the recitation brings relief from the sufferings associated with life and death.

विनय करै कुलदीप शुभिशा ।

**(Humility brings auspiciousness to all.)**

This line emphasizes that humility leads to blessings.

जाके नाम हरे राम रघुराई ।

**(Your name is connected with Lord Rama.)**

This speaks about Chitragupt's divine connection with Lord Rama.

ध्यान धरै करै सदा सुखाई ।

**(Those who meditate on you will find eternal happiness.)**

It indicates that meditation on Chitragupt brings perpetual joy.

राम भक्त जन गण गाते ।

**(The devotees of Ram sing praises.)**

This line highlights the devotion of Ram's followers.

जय जय चित्रगुप्त गुसाईं ।

**(Hail, hail, Lord Chitragupt!)**

This is another invocation of praise for Chitragupt.

जो सुमिरै ध्यान धरै मन लागै ।

**(Whoever remembers and focuses on you.)**

This emphasizes the importance of remembrance and focus on Chitragupt.

**तिन्ह पावे सुख निसदिन लागै ।**

**(They will find happiness day and night.)**

It assures that devotees will experience joy continuously.

**श्री चित्रगुप्त जी का चरण प्रणाम ।**

**(Salutations to the feet of Shri Chitragupt.)**

This expresses reverence towards Chitragupt.

**कर्म शुभ साधना संतोष ।**

**(Through your grace, we achieve auspicious deeds and contentment.)**

It speaks about receiving blessings for good deeds and satisfaction.

**विघ्न हरन सभी को दिखाई ।**

**(You reveal yourself as the remover of obstacles.)**

This acknowledges Chitragupt's role in overcoming challenges.

**कर्म प्रगति पाय धरम निवाई ।**

**(Through your blessings, we adhere to righteousness.)**

It emphasizes the importance of following dharma with Chitragupt's guidance.

**तव महिमा अमिट अति बड़ाई ।**

**(Your glory is eternal and unparalleled.)**

This line praises the everlasting greatness of Chitragupt.

**जय जय चित्रगुप्त गुसाँई ।**

**(Hail, hail, Lord Chitragupt!)**

This is a final invocation of praise for Chitragupt.